

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से

— “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

बीच में पहुँचना ही चाहिए और

सबसे कहियेगा — सब बच्चों से

कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को

साहित्य के रूप में ज

युगऋषि वेदमूर्ति

पण्डित श्रीराम

प्रयास करें।” — पू

पण्डित श्रीराम शर्मा

(गायत्री परिवार के

संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि आप ज्ञान वाक्मय सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” - पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्रष्टा का परम प्रसाद—प्रखर प्रज्ञा

इक्कीसवीं सदी की दैवी रूपरेखा और मानवीय रूपान्तरण का विज्ञान

ध्वंस

निम्न ऊर्जा की
आवश्यकता

एक दिन में मकान नष्ट करना
केवल एक फावड़े का काम है।

नवसृजन के लिए
प्रखर प्रतिभाओं की
अनिवार्य आवश्यकता

नये सिरे से भव्य भवन का निर्माण
अत्यधिक समय और कौशल माँगता है।

उच्च कौशल,
समय और ऊर्जा

सृजन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

— वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान ब्रह्मन्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को पेरुप में जान-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

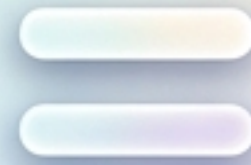
— पूज्य गुरुदेव युगक्रुपि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



सजल श्रद्धा



प्रखर प्रज्ञा



आत्मसन्तोष



लोक-सम्मान



दैवी अनुग्रह

इस अनुपात के जाग्रत होते ही वासना, तृष्णा और
अहंता की मोह-निद्रा स्वतः समाप्त हो जाती है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

बाह्य लक्षण

रुग्णता

दरिद्रता

दुर्बलता

शत्रुता

सभी विपत्तियों की
जड़ एक ही है।

दिग्भ्रान्ति

मध्यवर्ती कारण

अदूरदर्शिता/
अविवेक

मूल कारण

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप
सबसे कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



लक्षणात्मक उपचार



पत्ते सींचना



फोड़े-फुन्सियों का
ऊपरी इलाज

परिणाम: तात्कालिक व निरर्थक

प्रणालीगत उपचार

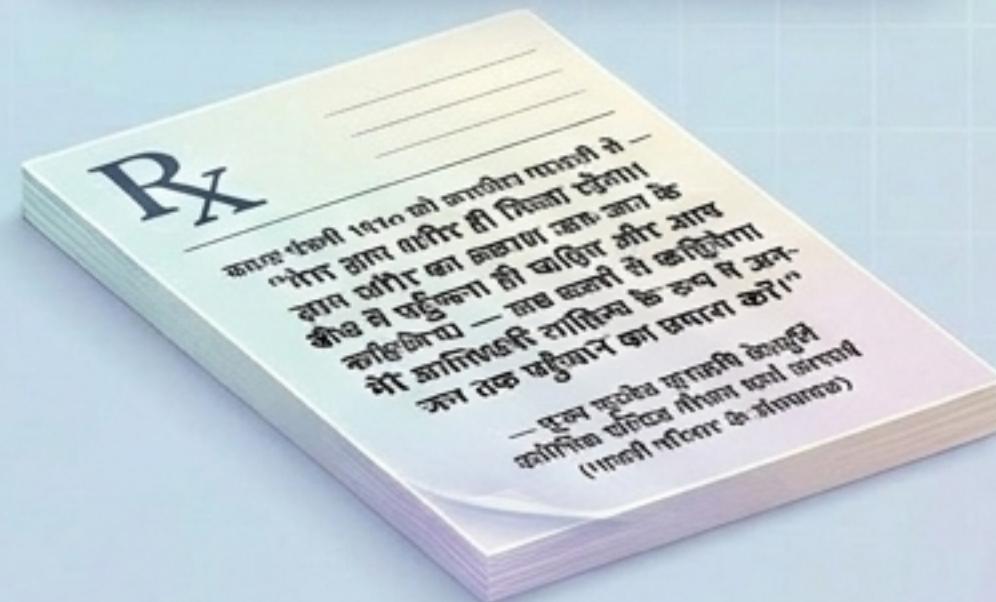


जड़ सींचना



रक्त शोधक
उपचार

परिणाम: स्थायी समाधान



विचार क्रान्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

जगत् और आप सबसे कहियेगा

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना का प्रयास करें।”

दरिद्रता निवारण

अशिक्षा उन्मूलन

अस्वस्थता मुक्ति

दुष्प्रवृत्तियों का अन्त

विचारों का तारतम्य सही बिठाने से अन्यान्य बहुमुखी
विकृतियों पर स्वतः काबू पाया जा सकता है।

घर-घर अलख जगाना,
सामूहिक कर्मकाण्ड

सीमित प्रभाव

विज्ञान का वरदान

1



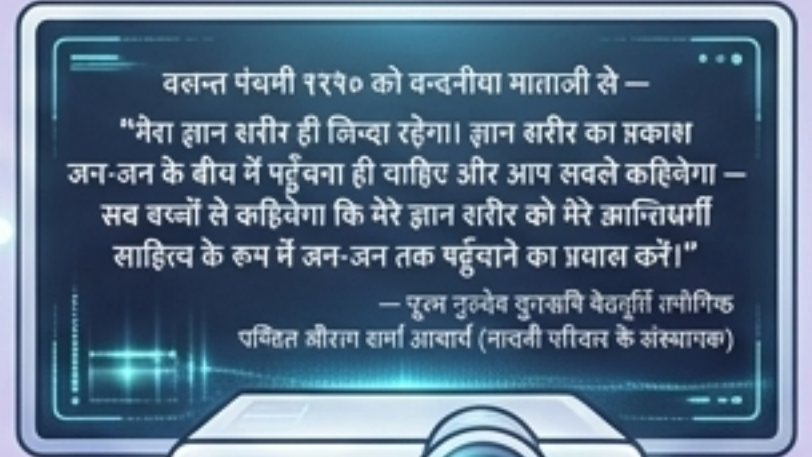
प्रेस

2



लाउडस्पीकर

4



प्रोजेक्टर / वीडियो

3



टेपरिकार्डर

कम समय में बड़े पैमाने पर
विचारोत्तेजक प्रवाह।

असफलता



टेढ़ी-मेढ़ी
अनगढ़ बन्दूक

मात्र उपदेश और
वाचालता
=
असफलता



लक्ष्य चूक

सफलता



बढ़िया और सटीक
बन्दूक

मन, वचन, कर्म से आदर्शों
के प्रति समर्पित प्रामाणिक चरित्र
=
लक्ष्य-भेदन



लक्ष्य भेदन

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गावत्री परिवार के संस्थापक)

आत्मसन्तोष, लोक-सम्मान
और दैवी अनुग्रह की प्राप्ति

स्वल्प सन्तोषी दृष्टिकोण /
आर्थिक सुविधा में कमी स्वीकारना

ब्राह्मणोचित
जीवन अंगीकार

कुत्सा-कुण्ठाओं
पर विजय

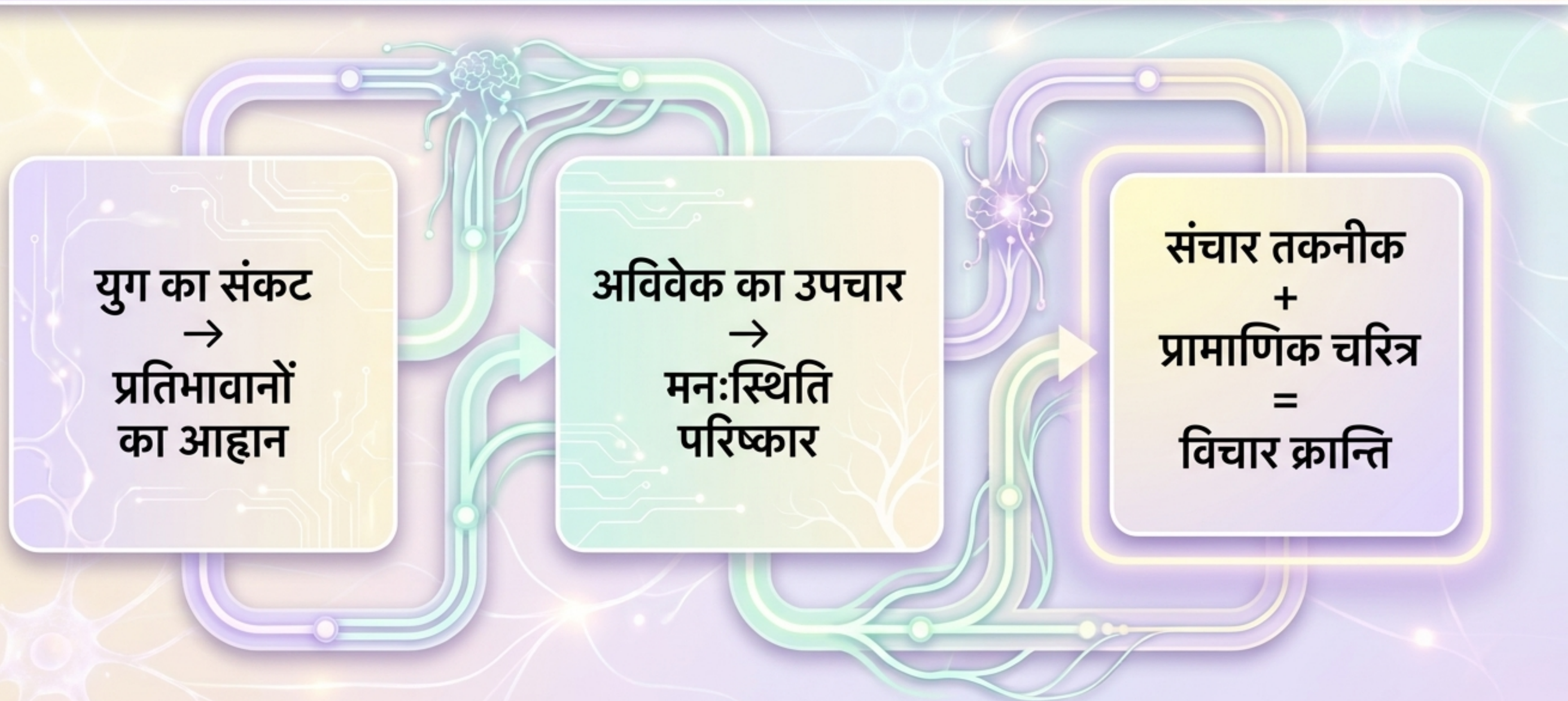
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रयि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



आपका योगदान



समयदान



अंशदान / संसाधन



क्रान्तिधर्मी साहित्य का
जन-जन तक प्रसार

असमंजस की स्थिति में शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से परामर्श करें।

**अरुणोदय निश्चित है। दैवी प्रेरणा से ऐसे संकल्प हर परिष्कृत अन्तःकरण में अनायास ही अवतरित हो रहे हैं।
आवश्यकता मात्र उन्हें कार्यरूप में परिणत करने की है।**

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)